अविनाशी भाग्य

ब्र.कु.श्वेता, शान्तिवन

(देवी-देवताओं का दिव्य, अलौकिक चेहरा उनकी भीतरी पवित्रता का स्पष्ट प्रतिबिम्ब प्रस्तुत करता है परंतु आज का मानव, जैसे कृत्रिम प्रसाधनों से शारीरिक कुरूपता को ढकने का प्रयास करता है, वैसे ही बनावटी हाव-भाव से व्यवहार को भी जटिल बना लेता है लेकिन ओढे गए आवरण अविनाशी नहीं होते, वे एक-न-एक दिन हट जाते हैं। ऋषि-मुनियों ने मानव जीवन के इस खोखलेपन और संबंधों के बनावटीपन को अनुभव करके संसार को 'मिथ्या' और 'भ्रमजाल' कह डाला। जीवन का नंगा सच सामने आते ही मनुष्य भीतर से टूटने लगता है, सपने बिखरने-से लगते हैं पर समय पर मिला ईश्वरीय संग, आध्यात्मिकता का संग उसे संबल बन बचा लेता है। प्रस्तुत नाटिका का नायक भी देह और देह के संबंधों के झूठे मोह-आवरण से ढका हुआ है। वह अपने को संसार का सबसे सुखी व्यक्ति होने का भ्रम पाले हुए है परंतु एक साधु द्वारा प्रदत्त अंतर्दृष्टि के प्रतीक चश्मे द्वारा दैहिक संबंधों के राग के पीछे छिपे विष का साक्षात्कार करते ही उसका भ्रम टूट जाता है और वह सच्चे प्यार की तलाश में भटकने लगता है। भगवान शिव की शरणागति पाकर वह धन्य हो जाता है। प्रस्तुत है एक लघु नाटिका)

पात्र परिचय –

मनमोहन देसाई (उम्र 55 वर्ष) – घर का मुखिया

सुशीला देसाई (उम्र 30 वर्ष) – मनमोहन देसाई की दूसरी पत्नी

रवि देसाई (उम्र 28 वर्ष) – मनमोहन देसाई का बेटा

सीमा देसाई (उम्र 22 वर्ष) - मनमोहन देसाई की बेटी

(मनमोहन देसाई समुद्र के किनारे सैर कर रहा है। सैर पर आना और पास के हाट बाज़ार से कुछ न कुछ फालतू चीज़ें खरीद लेना उसकी दिनचर्या में शामिल है। तभी सामने से पड़ोसी धर्मचंद आता दिखाई देता है)

धर्मचन्द भाई :- कैसे हो, देसाई? (मन ही मन अपने इस अनुपयुक्त प्रश्न पर शर्मिन्दा होते हुए) अरे, मैं भी किससे पूछ बैठा, आप जैसे खुशमिजाज, खुशहाल व्यक्ति से! हमारे घर में तो प्रतिदिन कोई न कोई खिटपिट लगी ही रहती है परंतु आप जैसा भाग्य तो विरले ही किसी का होगा। इतने दिनों से देख रहा हूँ सैर पर, आपके चेहरे पर उदासी की हलकी-सी छाया भी नहीं होती।

मनमोहन देसाई : (प्रकट में कुछ न कहते हुए, आगे बढ़ते हुए धर्मचन्द जी को निहारते हैं और मन ही मन बुदबुदाते हैं) सच ही तो है, नाम के अनुरूप मेरी सुशील और पतिव्रता पत्नी, आज्ञाकारी बेटा-बहू और बुद्धिमान बेटी, जो हमेशा महाविद्यालय में अव्वल आती है (गर्व से मस्तक ऊँचा कर लेते हैं) कितना सुंदर और प्यारा है स्नेह के धागों से बना और खुशियों के झूले में झूलता मेरा घरौंदा! (घड़ी देखता है) अरे! 8 बज गए, चलता हूँ, सुशीला इंतजार कर रही होगी नाश्ते के लिए।

(लंबे-लंबे डग भरता हुआ वह मुख्य सड़क पर आ जाता है। खाली सड़क पर गहन शांति छाई है। सामने से एक साधु बाबा मंद-मंद चाल से चले आ रहे हैं। कंधे पर एक कोपिन है और मुख पर गहन निश्चिंतता। मनमोहन देसाई एक अदृश्य आकर्षण में बँधा उसी पर नज़रें टिकाए है। पास आने पर वह साधु का तत्परता से अभिवादन करता है और स्मृति पर जोर डालने पर उसे याद आ जाता है कि इनको तो बचपन में भी कई बार मोहल्ले में कथा-कीर्तन करते देखा हे)

साधु जी: कैसे हो भाई?

मनमोहन देसाई: सब आपकी कृपा है, आनन्द-मौज में हूँ।

साधु जी: आनन्द दो प्रकार का होता है स्थायी और अस्थायी, तुम कौन-से में हो?

मनमोहन देसाई: इतना गंभीरतापूर्वक चिंतन तो मैंने कभी नहीं किया।

साधु जी: अच्छा सुनो, आपको एक चश्मा देता हूँ इसको लगाते ही तुम्हें दूसरे के मन में चल रहे विचारों का ज्ञान हो जायेगा (कंधे के थैले में से एक चश्मा निकालता है जो वास्तव में आंतरिक दृष्टि का प्रतीक है और मनमोहन देसाई के हाथ में थमा देता है, जिसे मनमोहन देसाई तुरंत पकड़ लेता है और दोनों अपने-अपने रास्ते बढ़ चलते हैं। देसाई चश्मे के बारे में सोचता हुआ घर आता है, पंखा चलाकर सोफे पर परस जाता है, पैदल चलने के कारण सांस फूल रही है तभी सुशीला आती है, हाथ में एक गिलास पानी पकड़े हुए)

सुशीला : (चेहरे पर चिंता के भाव लाते हुए) आज आपने बहुत देर कर दी, आपकी तबीयत तो ठीक है ना, इतना क्यों चलते हैं? (हाथ से पंखा झलती है) कितना पसीना निकल रहा है।

देसाई: नहीं, नहीं, मैं ठीक हूं, तुम मेरा कितना ख्याल रखती हो, तुम्हारे होते मुझे क्या हो सकता है? मैं कितना भाग्यशाली हूँ जो तुम जैसी पत्नी मिली (चश्मे का ध्यान आता है) अच्छा, तुम्हें एक चीज़ दिखानी है, आज मुझे एक साधु से बहुत अच्छी चीज़ मिली है। (जेब से चश्मा निकाल पहनता है, पत्नी के चेहरे की तरफ देखता है, कानों में आवाज आती है)

'कैसा सनकी आदमी पल्ले पड़ा है, जब देखो ऐसी-वैसी चीज़ें उठा लाता है, घर को कबाड़खाना बना डाला है। पता नहीं कब पीछा छूटेगा, जल्दी मरे तो संपत्ति मिले, राकेश भी कब से मेरा इंतजार कर रहा है।'

(देसाई को एकदम झटका लगता है, पत्नी के चेहरे की तरफ देखता ही रह जाता है, ऊपर से कितनी मासूमियत, करुणा, प्यार और संतुष्टता पर अंदर इतना घिनौना चेहरा! वह भारी कदमों से अपने कमरे की ओर बढ़ जाता है। धीरे-धीरे शाम ढल जाती है। रवि के पाँवों की पदचाप सुनकर वह आँगन में आ जाता है और दोनों में व्यापार की बातें शुरू हो जाती हैं)

रवि: पिताजी, मैंने अधिक लाभ देने वाली एक योजना सोची है। (कान के पास मुँह ले जाकर कुछ कहता है)

देसाई : बेटा, तुम ऐसा करोगे? मिलावट! गरीब जनता का हम पर विश्वास है। थोड़े से लाभ के लिए हम कितनों के स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ करेंगे?

रवि : लेकिन पिताजी, इससे मुनाफा भी तो दो गुणा होगा, फिर मिलावट का तो पता भी नहीं चलेगा।

देसाई : बेटा, जब तक मैं जी रहा हूँ, ऐसा नहीं होने दूँगा, मेरे मरने के बाद तुम जो चाहो सो करना।

रवि : (चेहरे पर बनावटी ग्लानि के भाव लाते हुए) नहीं पिताजी, मुझे माफ करना, मैंने तो बस ऐसे ही योजना बनाई थी, आप ज्यादा अनुभवी हैं। आप जैसा कहेंगे, वैसा ही होगा, हम तो चाहते हैं कि हमारे सिर पर आपका हाथ हमेशा बना रहे।

(देसाई का मन रवि की बातों से आश्वस्त नहीं होता है, उसे लगता है कि रवि यह बात दिल से स्वीकार नहीं कर रहा है। आजमाने के लिए जेब से चश्मा निकालता है और बेटे के चेहरे की तरफ देखता है, कानों में शब्द आते हैं)

'आज पहली बार बुढ़ऊ ने मरने की बात कही है,यह जिंदा रहा तो कारोबार वहीं का वहीं रहेगा और मेरा धनवान बनने का सपना कभी पूरा नहीं होगा, हमेशा ईमानदारी की बातें करता है, आज के जमाने में भला कहाँ उनके आदर्श चलेंगे, जल्दी मरे तो पीछा छूटे, फिर देखना मैं व्यापार को कहाँ से कहाँ ले जाता हूँ।'

(विस्मय से देसाई की आँखें फैल जाती हैं। वह लुटे हुए व्यक्ति के समान उठकर कमरे में चला जाता है और अपने आपसे ही बतियाने लगता है जिस घर के चिराग को लहू से रोशन किया, वही आज घर की रोशनी बुझाने पर तुला है। जिसे संसार, समाज में सद्‌गुणों का प्रकाश फैलाना चाहिए, वह रवि स्वार्थ के घिनौने कृत्य करने पर तुला है। मेरी पालना में कहाँ कमी रह गई? अब जीकर क्या करूँग। सभी मेरी संपत्ति के पीछे पड़े हैं, मैं सोचता था कि इन्हें मुझसे प्यार है। कितने बड़े भ्रम में जी रहा था मैं, आज इस चश्मे द्वारा मिली अन्तर्दृष्टि की बदौलत आँखें खुल गई। पत्नी के कदमों की आहट उसे चौकन्ना कर देती है)

सुशीला : (अच्छी साड़ी पहने, गहनों से शृंगार किये आती है) अरे, आप अभी तक तैयार नहीं हुए, बाहर जाना था।

देसाई : (गुस्से से) मुझे नहीं जाना, तुम अकेली चली जाओ।

सुशीला : (थोड़ी सहमकर प्यार जताते हुए) क्या हुआ, तबीयत ठीक नहीं है क्या? आप कभी ऐसे गुस्से से बात नहीं करते।

देसाई (लगभग चिल्लाते हुए) : एक बार कहा न, नहीं जाना, तुम्हें जाना हो तो जाओ।

(सहमी हुई सुशीला चुपके से कमरे से निकल जाती है। देसाई की आँखों में नींद नहीं, पूरी रात चहलकदमी में गुजर जाती है। घड़ी की ओर देखता है कि सुबह के 4 बज रहे हैं। बेचैनी में कुर्सी से उठता है और बालकनी की तरफ जाता है, नीचे सीमा खड़ी दिखाई देती है। विचार चलता है कि इतनी सुबह यह दरवाजे के पास क्या कर रही है, इसके हाथ में तो यह बड़ा बैग है, लगता है कहीं जाने की तैयारी में है, कॉलेज तो 9 बजे जाती है, कैसे पता लगाया जाये, सीमा से ही पूछता हूँ। आवाज देने को मुख खोलने ही वाला होता है कि चश्मे का ध्यान आता है, उसे लगाकर सीमा के चेहरे की तरफ देखते ही, आवाज़ कानों में पड़ती है – पता नहीं राहुल कहाँ रह गया, इतनी देर क्यों कर दी, समय तो 4 बजे का ही दिया था, कितनी मुश्किल से मम्मी के सारे जेवर निकालकर लाई हूँ, कहीं डैडी उठ न जाए, सुबह होने से पहले ही यह शहर छोड़ देना है)

(देसाई की टाँगे लड़खड़ाने लगती हैं। अंतिम विश्वास की धरनी भी खिसक गई, बड़ी मुश्किल से शरीर को बिस्तर तक घसीटता है, लुढ़क जाता है। चिंतामग्न है कि आज तक देह के झूठे रिश्तों पर भरोसा किया पर एक-एक कर सबने धोखा दिया। अब भगवान का ही सहारा हैं, दूर कहीं गीत बजता है – झूठे हैं ये जग के रिश्ते...। वैराग्य से भरे देसाई के मन को घर के सभी लोग मुखौटे पहने भेड़िये नज़र आते हैं, सब पर गुस्सा और घृणा आती है। दो दिन बाद सुबह-सुबह, संसार की क्रूर वास्तविकता का सामना कर हताश, निराश हुआ देसाई सैर पर निकला। लौटते समय मन न होते हुए भी ना जाने क्यों पैर हाट बाज़ार की ओर बढ़ गये, दो-चार दुकानों को सरसरी नज़रों से देखता आगे बढ़ रहा था कि सामने बोर्ड दिखाई दिया, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय, सच्चे आत्मिक पिता से 21 जन्मों के लिए सुख-शान्ति का वर्सा लें।

देसाई (स्वगत)- अजीब-सा नाम है, नीचे लिखी पंक्ति भी अजीब ही है, सच्चा आत्मिक पिता, कौन है वह? (पास के दुकानदार से पूछता है) – अरे भाई, यह बोर्ड आज ही लगा है क्या? पहली बार देख रहा हूँ।

दुकानदार : नहीं साहब, इसे लगे तो 3 दिन हो गये, दो श्वेत वस्त्रधारी बहनें आई हैं, सत्संग कराती हैं।

(देसाई के अशांत मन में खींच अनुभव हुई, चलकर देखना चाहिए, क्या है, अंदर गया, इतना शांति का वातावरण। सामने खड़ी बहन के चेहरे पर चमकता तेज, नेत्रों से छलकता आत्मिक प्यार, दिव्यता, अलौकिकता, दो घड़ी देखता ही रह गया)

ब्रह्माकुमारी बहन : आओ आत्मिक भाई, आप अपने पिता के घर आये हो, इतने जन्मों से बिछुड़े अपने परमपिता से मिलकर उनसे 21 जन्मों का वर्सा ले लो।

देसाई (स्वगत)- क्या पता, यह बहन भी कहीं दिखावा तो नहीं कर रही, मुझे बहला-फुसलाकर दान देने के लिए प्रोत्साहित करेगी। आजकल ऐसा ही तो हो रहा है पूरी दुनिया में, कहीं पर भी तो नि:स्वार्थ प्यार नहीं है, अब मैं धोखा नहीं खाऊँगा। (चश्मे से देखने का पुरुषार्थ करता है और बहन का संकल्प सुनाई देता है) 'मेरे मीठे बाबा, यह भी आपका ही बच्चा है, ना जाने कब से आपको ढूँढ़ रहा है, इसकी भी आत्मिक ज्योति जग जाये, सभी प्राप्तियों से संपन्न बन जाये।'

(देसाई की आँखें गंगा-जमुना बन गई, कितनी शुभभावना, कितना सच्चा स्नेह है। बहन जी ने ज्ञान देना शुरू किया कि आप मनमोहन देसाई नहीं, आप तो एक आत्मा हैं, आपका सच्चा-सच्चा पिता परमपिता परमात्मा है, बाकी सभी तो देह के झूठे रिश्ते हैं, अब वह पिता आया हुआ है हमें वही प्यार, दुलार देने जिसके लिए हम गाते आए, तू प्यार का सागर है, तेरी इक बूँद के प्यासे हम..)

देसाई (मुसकराहट के साथ): बहन जी, मैं सांसारिक भाग्य के खो जाने का मलाल लेकर यहाँ आया था पर अविनाशी भाग्य प्राप्त कर मालामाल होकर लौट रहा हूँ।

(समाप्त)